अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

छायावाद की प्रवृतियां

Dr Kamna Kaushik
Associate Professor Hindi, Vaish College Bhiwani

छायावाद : द्विवेदी युग की काव्यगत इतिवृत्तात्मकता, स्थूलता, आदर्शो की प्रतिक्रिया और अंग्रेजी के रोमाण्टिक कवियों की काव्य रचना के अध्ययन के फलस्वरूप छायावाद का जन्म हुआ। छायावाद के नामकरण का श्रेय 'मुकुटधर पांडेय' को दिया जाता है। इन्होंने सर्वप्रथम 1920 ई० में जबलपुर से प्रकाशित श्री शारदा पत्रिका में 'हिंदी में छायावाद' नामक चार निबंधों की एक लेखमाला प्रकाशित करवाई थी। मुकुटधर पाण्डेय ने सर्वप्रथम व्यंग्यात्मक रूप में छायावाद शब्द का स्वच्छन्दतावादी नवीन अभिव्यक्तिमय रचनाओं के लिए प्रयोग किया, जो बाद में इस कविता के लिए रूढ़ हो गया और स्वयं स्वच्छन्दतावादी कवियों ने इसे अपना लिया। आधुनिक हिंदी काव्य में छायावाद को ''आधुनिक हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग'' कहा जा सकता है। यह युग साहित्य के क्षेत्र में एक क्रांति था जिसमें कला पक्ष तथा भाव पक्ष दोना दृष्टिकोण से उत्कर्ष का चरम दिखाई देता है। सन 1920 से सन 1936 तक के काव्य को छायावाद कहा जाता है। दो विश्व युद्धों के बीच सृजित स्वच्छन्दतावाद की कविता को सामान्यतः छायावाद के नाम से अभिहित किया गया। सन् 1918 से 1939 ईसवीं पर्यन्त छायावादी काव्य अपने पूर्ण यौवन के साथ हिन्दी साहित्य के रंगमंच पर अपनी मनोहारी अदाएँ दिखाता रहा। विद्वानों ने छायावादी काव्य को अपने–अपने ढंग से परिभाषित किया। उनमें से प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार से हैं :–

जयशंकर प्रसाद के शब्दों में– "अपने भीतर से पानी की तरह अन्तःस्पर्श करके भाव समर्पण करने वाली अभिव्यक्ति छाया कान्तिमय होती है।''

महादेवी वर्मा के शब्दों में– "छायावाद ने मनुष्य के हृदय और प्रकृति के उस सम्बन्ध में प्राण डाल दिये जो प्राचीनकाल में बिम्ब–प्रतिबिम्ब के रूप में चला आ रहा था और जिसके कारण मनुष्य अपने दुःख में उदास और पुलकित जान पड़ती थी।"

डॉ. नगेन्द्र के शब्दों में– "छायावाद एक विशेष प्रकार की भाव पद्धति है, जीवन के प्रति एक विशेष भावात्मक दृष्टिकोण है।"

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 1927 ईस्वी में 'सरस्वती' पत्रिका में 'छायावाद के संबंध में लिखा था। ''छायावाद से लोगों का क्या मतलब है कुछ समझ में नहीं आता। शायद उनका मतलब है कि किसी कविता के भावों की छाया यदि कहीं अन्यत्र जाकर पड़े तो उसे छायावादी कविता कहना चाहिए।''

डॉ रामकुमार वर्मा भी छायावाद को रहस्यवाद से जोड़ते हैं वे कहते हैं– ''जब परमात्मा की छाया आत्मा में पड़ने लगती है और आत्मा की छाया परमात्मा में तो यही छायावाद है।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

नंददुलारे वाजपेई ने 'हिंदी साहित्य : बीसवीं सदी' पुस्तक में इसे आध्यात्मिक छाया का भान कहा है । उनके अनुसार – ''छायावाद सांसारिक वस्तुओं में दिव्य सौंदर्य का प्रत्यय है।''

डॉ नगेंद्र के अनुसार – ''स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह ही छायावाद है।''

आचार्य नन्ददुलारे बाजपेई के शब्दों में– "मानव अथवा प्रकृति के सूक्ष्म किन्तु व्यक्त सौन्दर्य में आध्यात्मिक छाया का भाव मेरे विचार में छायावाद की एक सर्वमान्य व्याख्या हो सकती है।"

पंतजी ने सौन्दर्य की छाया को छायावाद माना है। प्राकृतिक चित्रणों में कवि की अपनी भावनाओं में प्राकृतिक सौन्दर्य की छाया ही छायावाद है।

महादेवी जी का कथन है कि ''मनुष्य का हृदय अपनी अभिव्यक्ति के लिए रो उठा, स्वछंद छंद में चित्रित उन मानव अनुभूतियों का नाम छाया उपयुक्त ही था। छायावाद तत्वतः प्रकृति के जीवन का उद्‌गीथ है।''

प्रसाद जी कहते है कि– ''मोती के भीतर छाया जैसी तरलता होती है, वैसी ही कांति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति व अभिव्यक्ति की भंगिमा पर निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक विधान तथा उपचार वक्रता क साथ स्वानुभूति की विवृति छायावाद की विशेषताएं हैं।"

डॉ. रामकुमार वर्मा – ''छायावाद वास्तव में हृदय की एक अनुभूति है। वह भौतिक संसार के क्रोड में प्रवेश कर अनन्त जीवन के तत्त्व ग्रहण करता है और उसे हमारे वास्तविक जीवन से जोड़कर हृदय में जीवन के प्रति एक गहरी संवेदना और आशावाद प्रदान करता है।''

डां. देवराज ने छायावाद को गीतिकाव्य, प्रकृति काव्य, प्रेम काव्य तथा रहस्यवादी काव्य कहा है। इनके मतानुसार इसमें धूमिलता या अस्पष्टता, बारीकी या गुम्फन की सूक्ष्मता तथा काल्पनिकता और कल्पना वैभव के रूप में तीन मुख्य तत्व विद्यमान हैं।

प्रसाद जी ने छायावाद को भारतीय परम्परा में विकसित काव्य की एक नूतन प्रणाली सिद्ध किया है। मोती के भीतर छाया की जैसी तरलता होती है, वैसी ही कान्ति की तरलता अंग में लावण्य कही जाती है। इस लावण्य को संस्कृत–साहित्य में छाया और विच्छित्ति के द्वारा कुछ लोगों ने निरूपित किया था । अतः सन्दर्य के इसी सूक्ष्म रूप को अपनाते हुए पौराणिक कथाओं एवं नारी के बाह्य सौन्दर्य के वर्णन से भिन्न जिन कविताओं में वेदना के आधार पर स्वानुभूतिमयी अभिव्यक्ति हुई, वही छायावाद है ।

आचार्य नन्द दुलारे वाजपेयी ने छायावाद में भावुकता, सांकेतिकता, रहस्य, दुरूहता,कोमल–कांत पदावली, प्रकृति प्रेम, उच्छृंखलता आदि तत्वों का समावेश बताया है।

महान कवयित्री महादेवी वर्मा ने ''छायावाद को आत्माभिव्यक्ति के लिए मनुष्य के हृदय की अकुलाहट का परिणाम माना है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदीअनुसार– "मानवीय दृष्टि के कवि की कल्पना, अनुभूति और चिन्तन – के भीतर से निकली हुई, वैयक्तिक अनुभूतियों के आवेश की स्वतः समुच्छित अभिव्यक्ति बिना किसी अभ्यास के व बिना किसी प्रयत्न के स्वंय निकल पड़ा भावस्रोत ही छायावादी कविता का प्राण है ।''

पं. रामचन्द्र शुक्ल ने छायावाद शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया है। एक तो रहस्यवाद के सम्बन्ध में जहां उसका सम्बन्ध काव्य की कथावस्तु से होता है और जिसमें कवि उस अज्ञात और अनन्त प्रियतम को आलम्बन बनाकर अत्यन्त चित्रमयी भाषा में प्रेम की अभिव्यंजना करता है और दूसरे वाक्य शैली या पद्धति विशेष के व्यापक अर्थ में। इसीलिए शुक्ल जी ने हिन्दी के प्रमुख छायावादी कवियों को दो वर्गों में विभक्त किया है। पहले में वह महादेवी को रखते हैं और दूसरे में पंत, प्रसाद, निराला तथा उन सब कवियों को जो प्रतीक पद्धति या चित्रभाषा शैली की दृष्टि से छायावादी कहलाये।''

इन विभिन्न परिभाषाओं को दृष्टिगत कर यह कह सकते हैं कि छायावाद में परमात्मा के प्रति प्रकृति के माध्यम से प्रणय भाव प्रकट किया गया है। मानवीकरण की प्रधानता के साथ प्रकृति में चेतना का आरोप किया गया है। छायावाद द्विवेदी युग की इतिवत्तात्मक कविता की प्रतिक्रिया है। छायावाद के चार स्तम्भ माने जाते हैं–जयशंकर प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नन्दन पंत और महादेवी वर्मा। इनके अतिरिक्त माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', रामनरेश त्रिपाठी, डॉ. रामकुमार वर्मा, उदयशंकर भट्ट, महतो 'वियोगी', लक्ष्मीनारायण मिश्र, जनार्दन प्रसाद आदि की भी गणना छायावादी कवियों में होती है क्योंकि इन्होंने भी छायावादी पद्धति की कतिपय रचनाएँ लिखी हैं। उपर्युक्त कवियों के काव्य के आधार पर छायावादी काव्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार से हैं –

राश्ट्रीय एवं सांस्कृतिक चेतना : आलोच्यकाल में दे"ा अपनी अस्मिता एवं अस्तित्व के लिए अंग्रेजों के साथ संघर्षरत था। भारत दे"ा की धन सम्पदा का शोषण कर अंग्रेज अपने दे"ा की श्रीवृद्धि कर रहे थे। जनाक्रो"ा स्वाभाविक था। जनाक्रो"ा को स्वर देने वाले नेताओं ने स्वाधीनता संग्राम को रूपाकार दिया। साहित्यिक क्षेत्र में 'राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा ने विदे"ाी शासन से मुक्ति दिलाने हेतु स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने हेतु भारतीयों को प्रेरित किया तथा भारतीय जनमानस को आन्तरिक विषमताओं को दूर करने के लिए प्रेरित किया। अधिका"ातयः कवि स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे। इनकी राष्ट्रीय भावना कई रूपों में प्रकट होती है। पराधीन भारतीयों में राष्ट्रीयता का भाव जागृत करने हेतु कवियों ने गौरव"ाली अतीत का य"ागान कर राष्ट्रीय भाव जागृत किया। हमारे दे"ा की संस्कृति सबसे प्राचीन है। हमें सदैव हमारी संस्कृति और सभ्यता पर गर्व करना चाहिए। यथा :

''जगे हम, लगे जगाने विश्व,
लोक में फैला फिर आलोक
व्योमतम पुंज हुआ तब नष्ट,
अखिल संसृति हो उठी अशोक।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

हमें अपने भारत दे"ा पर स्वाभिमान होना चाहिए। सबसे पहले ज्ञान का उदय भारत में हुआ फिर हमने दूसरे दे"ाों में ज्ञान का प्रसार किया। हमारे हृदय का तेज एवं गौरव आज भी वैसा है। आज भी आव"यकता पड़ने पर हम अपनी मातृभूमि के लिए सर्वस्व न्योछावर करने को तत्पर है।

''वही है रक्त, वही है देश,
वही साहस है, वैसा ज्ञान वही है
शांति, वही है शक्ति, वही
हम दिव्य आर्य संतान जिएँ तो सदा इसी के लिए,
यही अभिमान रहे
यह हर्ष निछावर कर दें हम सर्वस्व, हमारा प्यारा भारतवर्ष।

हिमाद्रि तंगु श्रृंग' गीत राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत है। इस गीत के माध्यम से गांधार के सैनिकों को उनके कर्त्तव्य का बोध कराते हुए समयानुसार उनका मनोबल ऊँचा करती हुई उन्हें प्रोत्साहित करती है।

"हिमाद्रि तुंग श्रृंग से। प्रबुद्ध शुद्ध भारती,
स्वयं प्रभा समुज्जवला स्वतन्त्रता पुकारती अमर्त्य वीर–पुत्र हो,
दृढ़ प्रतिज्ञ सोच लो, प्रशस्त पुण्य पन्थ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो।''

'हिमाद्रि तंगु श्रृंग' – यह एक राष्ट्रीय गीत है जिसका ओज ठण्डे रक्त भी खोल देता है। इसमें बलिदान का प्रबल भाव है। कवि निराला जी की 'भारती वंदना', 'राम की शक्ति पूजा', 'छत्रपति ि"ावाजी का पत्र', 'जागो फिर एक बार', आदि रचनाए दे"ा–प्रेम की भावना से ओत–प्रोत है। 'जागो फिर एक बार' कविता में कवि ने दे"ावासियों को भारत की दुर्द"ाा से अवगत कराते हुए परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ने का आह्वान किया है। यथा :

''पश्चिम की उक्ति नहीं
गीता है गीता है
स्मरण करो बार–बार
जागो फिर एक बार
पशु नहीं, वीर तुम, समर–शुर, क्रूर नहीं,
काल चक्र में हो दबे आज तुम राज कुंवर!
समर–सरताज! पर क्या है,
सब माया है–सब माया है,
मुक्त हो सदा ही तुम।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

दे"ा के गौरवमयी अतीत के साथ वर्तमान दुर्द"ाा का चित्रण 'दिल्ली' कविता में करते हुए निराला जी कहते हैं –

''क्या यह वही देश है–
भीमार्जुन आदि की कीर्ति क्षेत्र
चिरकुमार भीष्म की पताका ब्रह्मचर्य– दीप्त उड़ती है आज भी जहाँ के वायुमण्डल में उज्ज्वल अधीर और चिर नवीन?''।

वैयक्तिकता : छायावादी कवियों ने व्यक्तिगत अनुभूतियों हर्ष, विषाद, आ"ा–निरा"ाा के भाव को मुख्य रूप से अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। छायावादी कवि आत्मनिष्ठ थे, इसलिए इनके काव्य में अनुभूतियों एवं कल्पनाओं को अभिव्यक्ति दी गई है। अनुभूतियों का अक्षय भण्डार इन कवियों के हृदय में विद्यमान है। जब इन अनुभूतियों से मन उद्वेलित होने लगता है, विचलित होने लगता है, तब हृदय के भाव वाणी का रूप लेकर कविता में प्रकट हो जाते है।

''जो तुम आ जाते एक बार
कितनी करूणा कितने संदेश
पथ में बिछ जाते बन पराग
गाता प्राणों का तार तार
अनुराग भरा उन्माद राग
आँसू लेते वे पथ पखार
जो तुम आ जाते एक बार।''

इसी भाव को प्रकट करत हुए महादेवी जी लिखती है–

''मै नीर भरी दुःख की बदली!
स्पन्दन में चिर निस्पन्द बसा
क्रन्दन में आहत विश्व हँसा
नयनों में दीपक से जलते,
पलकों में निर्झारिणी मचली!''

व्यक्तिगत अनुभूतियों की अभिव्यक्ति छायावादी काव्य से पूर्व काव्यधाराओं में द"र्नीय नहीं है। छायावादी कवियों ने निजी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति में जो निर्भिकता और साहस दिखलाया है उससे काव्य परम्परा में सामाजिकता का स्थान आत्मभिव्यक्ति ने ले लिया है। डॉ० ि"ावदान सिंह चौहान अनुसार यही वैयक्तिक आत्माभिव्यञ्जना की पद्धति हिन्दी गीतिकाव्य के लिए बड़ी उपादेय सिद्ध हुई है। यथा –

''मैने मैं शैली अपनाई,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

देखा एक दुःखी निज भाई,
दुःख की छाया पड़ी हृदय में,
झट उमड़ वेदना आई।''

वैयक्तिकता के विषय में महादेवी ने कहा– ''इस व्यक्ति प्रधान युग में व्यक्तिगत सुख–दुःख अपनी अभिव्यक्ति के लिए आकुल थे अतः छायायुग का काव्य स्वानुभूति प्रधान होने के कारण वैयक्तिक उल्लास–विषाद का सफल माध्यम बन सका।'' छायावादी युग का मानव अपनी वैयक्तिकता की खोज में अत्यन्त आकुल था।

रहस्यवाद : छायावादी कवियों की अन्तर्मुखी प्रवृति की प्रधानता के कारण इनके काव्य में रहस्यवाद की भावना देखने को मिलती है। इन कवियों ने अव्यक्त, अगोचर, असीम चेतन"ाक्ति के प्रति कवियों के भावोद्‌गार को रहस्यवाद कहा जाता है। छायावाद में तत्वज्ञान, प्राकृतिक सौन्दर्य, प्रेम और वेदना आदि की उपस्थिति ने रहस्यभावना जिज्ञासा, कौतूहल की सुन्दर अभिव्यक्ति हुई है। पन्त, निराला कवि अलौकिकता से लौकिकता की ओर अग्रसर होते है। प्रसाद की रहस्योन्मुख भावना का उदाहरण द"र्नीय है –

''हे अनंत रमणीय कौन तुम?
यह मैं कैसे कह सकता,
कैसे हो? क्या हो? इसका तो–
भार विचार न सह सकता।''

महादेवी के काव्य में लौकिक प्रेम के साथ–साथ अलौकिक प्रेम भी देखने को मिलता है। उसमें रहस्यवाद अधिक है। महादेवी ने इस दृ"य जगत में व्याप्त उस असीम, अज्ञात, अगोचर, चेतन सत्ता के साथ संबंध स्थापित करने का प्रयास द"र्ाते हुए कहती है कि–''कौन मेरी कसक में नित. मधुरता भरता अलक्षित? कौन प्यासे लोचनों में घुमड़ घिर झरता अपरिचित। स्वर्ण स्वप्नों का चितेरा नींद के सूने निलय में कौन तुम मेरे हृदय में?''[10] पंत जी की निम्न पंक्तियों में जिज्ञासा विवृति देखने को मिलती है–

''स्तब्ध ज्योत्सना में जब संसार
चकित रहता शिशु सा नादान ,
विश्व के पलकों पर सुकुमार
विचरते हैं जब स्वप्न अजान,
न जाने नक्षत्रों से कौन
निमंत्रण देता मुझको मौन!''[11]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

सौन्दर्य भावना : सभी कवियों ने अपनी अनुभूतियों में कल्पना का रंग भरकर अपने प्रियतम की सौन्दर्य छवि का मार्मिक रूपांकन किया है। महादेवी के काव्य में स्थूल सौन्दर्य के स्थान पर सूक्ष्म सौन्दर्य देखने को मिलता है। उनकी सौन्दर्यानुभूति में मर्यादा व उदात्तता का ध्यान रखा गया है। प्रसाद जी की सौन्दर्य चेतना सर्वव्यपिनी है। कवि को जीवन और जगत के प्रत्येक उपादान में सौन्दर्य ही सौन्दर्य दिखाई पड़ता है। कवि का सौन्दर्य भाव वैदिक, बौद्ध, पौराणिक, शैव एवं सूफी संस्कृतियों के मेल में है। इनके सौन्दर्य बोध में नूतनता है। महादेवी वर्मा ने 'दीपf"ाखा' की भूमिका में लिखा है कि ''सत्य काव्य का साध्य और सौन्दर्य साधन है। एक अपनी एकता में असीम रहता है और दूसरी अनेकता में अनन्तः इसी साधन के परिचय–स्निग्ध खण्ड रूप से साध्य की विस्मय भरी अखण्ड स्थिति तक पहुँचने का क्रम आनन्द की लहर पर लहर उठाता हुआ चलता है। सौन्दर्य का आद"ा समय अनुरूप परिवर्तित होता रहता है। सुन्दरता मन व इन्द्रियों दोनों को प्रसन्न करती है। सौन्दर्य विविध रूप में देखा जाता है यथा प्रकृति, नारी, परोक्ष एवं जीवन सौन्दर्य। 'कामायनी' के प्रणयन–काल में श्रद्धा एवं इड़ा की सौन्दर्यनुभूति का चित्रण किया गया है। श्रद्धा का सौन्दर्य रूप भाव अत्यन्त श्लाघनीय है यथा :

> ''नील परिधान बीच सुकुमार, खुल रहा मृदुल अधखुला अंग।
> खिला हो ज्यों बिजली का फूल, मेघ–बन बीच गुलाबी रंग।।''

पंत की 'मोह' कविता में प्राकृतिक सौन्दर्य के प्रति प्रेमाभिव्यक्ति का उदाहरण दृष्टव्य है–

> ''छोड़ द्रुमों की मृदु छाया।
> तोड़ प्रकृति से भी माया,
> बाले! तेरे बाल–जाल में
> कैसे उलझा दूं लोचन?
> भूल अभी से इस जग को।''

छायावादी कवियों ने नर, नारी और f"ा"ाु तीनों के आन्तरिक व बाह्य सौन्र्दय का वर्णन किया है। मनुष्य को वि"व की सर्वश्रेष्ठ व सुन्दर कृति के रूप घोषित करते हुए पंत जी कहते है–

> ''सुन्दर हैं विहग, सुमन सुन्दर,
> मानव! तुम सबसे सुन्दरतम,
> निर्मित सबकी तिल–सुषमा से
> तुम निखिल सृष्टि में चिर निरुपम!''

नारी के प्रति दृश्टिकोण : छायावादी काव्य में नारी के विविध रूपों का वर्णन हुआ है। नारी वर्णन सूक्ष्म, उदात्त एवं वासना की गंध से रहित है। इनके काव्य में नारी पुरूष जीवन पथ की सहचरी, उसके मन की आ"ाा और कार्य के सम्बल के रूप में चित्रित हुई है। नारी का स्वतंत्र व्यक्तित्व भी चित्रित किया गया है। जीवन से हार जाने वाले मनु के लिए श्रद्धा नारी प्रेरणा के रूप में चित्रित हुई है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

छायावादी कवियों ने बन्दिनी नारी के प्रति श्रद्धा व्यक्त करते हुए उसे मुक्त करने का सन्दे"ा दिया है। प्रसाद, पन्त, निराला, महादेवी वर्मा आदि की रचनाओं में नारी की पवित्रता व महानता व्यक्त हुई है। निराला जी ने हिन्दु समाज में प्रचलित विवाह की मर्यादा को तोड़कर अपनी पुत्री सरोज का विवाह कन्नोजियों के प्रचलन अनुसार न करके एक सरयुपारीण ब्राह्मण के साथ किया। नारी को मुक्त करने का आह्वान करते हुए कहते हैं–

''मुक्त करो नारी को मानव, चिर वन्दिनी नारी को।
युग–युग की निर्मम कारा से, जननी सखि प्यारी को।।''

पन्त जी नारी जागरण की बात करते हुए कहते है कि नारी समाज का आधा अंग है। यदि यह विकृत रहेगा, बन्धन ग्रस्त रहेगा तो समाज की उन्नति कदापि संभव नहीं है। नारी स्वाधीनता की घोषणा करते हुए पन्त जी कहते हैं–

"योनि नहीं है रे नारी, वह भी मानवी प्रतिष्ठित,
उसे पूर्ण स्वाधीन करो, वह रहें न नर पर अवसित।
दवन्दव क्षुधित मानव समाज पशु जग से भी है गर्हित,
नर–नारी के सहज स्नेह से सूक्ष्म वृत्ति हो विकसित।''

निराला जी ने अमेल विवाह, नारी शोषण, विधवा विवाह आदि समस्याओं को जोरदार खंडन करते हुए नारी सम्मान के पक्षधर के रूप में सामने आए है। भारत दे"ा में विधवा स्त्री का जीवन किसी अभि"ाप से कम नहीं है। इसी पर प्रका"ा डालते हुए निराला जी कहते हैं–

''कौन उसको धीरज दे सक, तर
यह दुःख का भार कौन ले सके?
यह दुःख वह जिसका नहीं कुछ छोर है,
दैव, अत्याचार कैसा घोर और कठोर है!
क्या कभी पोंछे किसी के अश्रु–जल?
या किया करते रहे सब को विकल?
ओस–कण–सा पल्लवों से झर गया।
जो अश्रु, भारत का उसी से सर गया।''

प्रसाद जी ने नारी को श्रद्धा, वि"वास, ममता, बलिदान, त्याग, करूणा आदि गुणों से सम्पन्न कर नारी के उदार दृष्टिकोण को चित्रित करने का स्तुत्यः प्रयास किया है। यथा :–

''नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत–सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

श्रृंगार वर्णन : छायावादी काव्य में श्रृंगार रस का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ श्रृंगार वर्णन अतीन्द्रिय और सूक्ष्म है। श्रृंगार में कौतूहल और विस्मय है। इसकी अभिव्यंजना में कल्पना तथा सूक्ष्मता है। श्रृंगार के संयोग व वियोग दोनों पक्षों के आकर्षक चित्र छायावादी काव्य में चित्रित हुए है। वियोग श्रृंगार के भव्य चित्र प्रसाद कृत 'आंसू' में दृष्टव्य है। पंत जी काव्य में प्रेम और श्रृंगार की सहज अभिव्यक्ति हुई है। छायावादी कवि अपने जीवन में प्रेम प्राप्त करने असफल रहे। इनकी प्रणय गाथा का अन्त असफलता में हुआ। अतः श्रृंगार के वियोग वर्णन में विरह का रूदन अधिक है। इनके श्रृंगार वर्णन में सूक्ष्म भाव द"ाओं का वर्णन किया गया है, उसमें वासना की गंध नहीं है। यथा :

''तुम्हारे छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान
तुम्हारी वाणी में कल्याणी
त्रिवेणी की लहरों का गान।''

प्रकृति पर यत्र–तत्र नारी भावना का आरोप कर श्रृंगार भावना को अभिव्यक्त किया गया है। इनकी प्रणयगाथाओं में विरहानुभूतियों की व्यंजंना अत्यधिक तीव्र है। यथा :

''शून्य जीवन के अकेले पृष्ठ पर
विरह अहह कराहते इस शब्द को
किसी कुलिश की तीक्ष्ण चुभती नोंक से
निठुर विधि ने आंसुओं से है लिखा।''

विरह वेदना : छायावादी काव्यधारा का मूलाधार विरह वेदना चित्रण है। विरह वेदना की कसक इनके काव्य में वि"ोष रूप से निरूपित हुई है। पन्त जी ने यह स्पष्ट ही कह दिया कि पहला कवि कोई वियोगी ही हुआ होगा। प्रसाद का 'आँसू' काव्य विप्रलम्भ है, जिसमें करूणा व वेदना के भावपूर्ण दृ"य पाठक ह्रदय को द्रवित करने में सक्षम है। करूणा, व्यथा, पीड़ा आदि के सजीव चित्र द्वारा 'आँसू' काव्यकृति में प्रसाद जी ने मानवीय विरह वेदना का मनोवैज्ञानिक ढंग से निरूपण करते हुए विरह–वेदना के भावों की सफलाभिव्यक्ति की है। महादेवी को सुख की अपेक्षा दःख अधिक प्रिय है। इसी पर प्रका"ा डालते हुए महादेवी जी लिखती है– ''सुख और दुःख'' करूणा का भाव महादेवी जी की जन्मजात मिट्टी है। महादेवी जी कहती है–

''ऐसा तेरा लोक, वेदना नहीं,
नहीं जिसमें अवसाद,
जलना जाना नहीं,
नहीं– जिसने जाना मिटने का स्वाद!''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

पन्त जी काव्य निर्माण का कारण वेदना को ही मानते है। इनका विचार है कि जीवन में वेदना है, दुःखों की अधिकता है तो निर्'चत रूप उसकी अभिव्यक्ति काव्य भाषा के रूप में होगी। काव्य भाषा विरह वेदना की अभिव्यक्त का स"ाक्त माध्यम है। यथाः

''वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान,
निकल कर आँखों से चुपचाप, बही होगी कविता अनजान!''

प्रकृति चित्रण : छायावादी कवियों ने मानव के समान प्रकृति में चेतना का अनुभव करते हुए प्रकृति को मानव रूप में चित्रित किया है तथा प्रकृति के विविध रूपों को चित्रित कर प्रकृति चित्रण को सजीव, स"ाक्त एवं समृद्ध किया है। प्रकृति के पाँच तत्वों से निर्मित मानव में प्रकृति के प्रति अद्भुत आकर्षण देखा जा सकता है। प्रकृति मानव की चिर–सहचरी है। छायावादी कवयित्री महादेवी वर्मा ने प्रकृति का प्रयोग वातावरण की सृष्टि के लिए किया है। कवयित्री अपने काव्य में निर्जन, एकान्त और शोकपूर्ण वातावरण निर्माण हेतु गम्भीर प्रकृति का वर्णन करती है। इनके काव्य में विरह वेदना का चित्रण अधिक हुआ है, इसलिए प्रकृति भी इनके दुख से दुःखी होकर संवेदना व्यक्त करती हुई दिखाई देती है। यथा–

"आँसू बन–बन तारक आते, सुमन हृदय में से बिछाते
कम्पित वानोरों के वन भी रह–रह करुण विहाग सुनाते,
निन्द्रा उन्मन, कर–कर विचरण लौट नहीं अपने संचित कर
आज नयन आते क्यों भर–भर?''

निराला जी का काव्य संग्रह 'परिमल' में प्रकृति के अनेक सुन्दर चित्र देखने को मिलते है। उनके प्रकृति चित्रों में चित्रात्मकता, कल्पना, ध्वनयात्मकता और मूर्त विधान की क्रियाएँ देखी जा सकती है। 'संध्या सुन्दरी' शीर्षक कविता में कवि ने इन सभी क्रियाओं को समाविष्ट किया है। यथा–

"दिवसावसान का समय
मेघमय आसमान से
उतर रही संध्या–सुन्दरी
परी–सी धीरे– धीरे–धीरे।''

पन्त जी प्रकृति के बदलते वे"ा के सच्चे उपासक रहे है। यही कारण है प्रकृति के परिवर्तित रूप अनुरूप ये प्रकृति के मनोहारी चित्र प्रस्तुत करते थे। पंत जी ने प्रकृति के सभी रूपों का चित्रण प्रस्तुत किया। प्रकृति प्रेम का उदाहरण दृष्टव्य है–

''छोड़ द्रुमों की मृदु छाया
तोड़ प्रकृति से भी माया,
बाले! तेरे बाल जाल में,
कैसे उलझा दूँ लोचन।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

पंत जी को प्रकृति सौन्दर्य इतना अधिक भाता है कि प्रकृति के समक्ष नारी सौन्दर्य की भी उपेक्षा करने से झिझकते नहीं। प्रसाद ने प्रकृति में विरहत्व का अनुभव किया है। छायावाद में प्रकृति मानवमय और मानव प्रकृतिमय हो गया। उदाहरण दर्शनीय हैं –

''संध्या धनमाला की सुन्दर ओढ़े रंग बिरंगी छींट।
गगन चुबिनी शैल श्रेणियाँ पहने हुए तुषार किरीट।
विजनवन बल्लरी पर सोती थी सुहाग भरो
स्नेह–स्वप्न–मग्न,
अमल कोमल तनु तरुणी,
जूही की कली।''
प्रिय सांध्य गगन, मेरा जीवन।
यह क्षितिज बना, धुँधला विराग।''[27]

मानवतावाद : 'वि"व बंधुत्व' और 'वसुधैव कुटुम्बमम् का संदे"ा भारतीय संस्कृति के उदात्त एवं आद"ा मूल्यों को चित्रित करता है। जब–जब भारतीय सस्कृति पा"चात्य सभ्यता–संस्कृति के कुप्रभाव से क्षीण होने लगती है, तब–तब महापुरूषों ने इसे अक्षुण्णता प्रदान की। छायावादी कवि जाति, धर्म, दे"ा की सीमाओं से ऊपर उठकर सभी मनुष्यों के प्रति प्रेम रखते है। इनके मन में मनुष्य मात्र के प्रति प्रेम है। इनके मन में समाज के उपक्षित तथा शोषित मानव के प्रति अत्यधिक सहानुभूति थी। भारतीय परम्पराओं और मूल्यों को आजस्विता प्रदान करते हुए मानव में एक उज्ज्वल आत्मा का द"ान किया। इनकी कविता साधारण व्यक्ति की कविता है यथा–

''वह आता
दो टूक कलेजे के करता पछताता पथ पर आता।
पेट पीठ दोनों मिलकर हैं एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को, भूख मिटाने को।''

प्रसाद जी के काव्य में भी मानवतावाद व सनातन मानव–मूल्यों की रक्षा हुई है। इनकी सर्वश्रेष्ठ कृति 'कामायनी' महाकाव्य में श्रद्धा के माध्यम से व्यष्टि की अपेक्षा समष्टि को अत्यधिक महत्व दिया गया। समूची मानवजाति की मंगलकामना की अभिव्यक्ति हुई है। 'जियो और जीने दा'' के आधार पर मानवतावादी विचारों को चित्रांकित किया गया है यथा–

''औरों को हंसते देखो मनु, हँसो और सुख पाओ।
अपने सुख को विस्तृत कर लो, सब को सुखी बनाओ।"

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

छायावादी काव्य में मानवता का जयघोष पुनः निनादित हो उठा। मानवतावादी दृष्टिकोण में नारी महता को प्रमुखता से स्वीकारते हुए उसे आदर व मान–सम्मान देने का प्रयास किया गया यथा–

''नारी! तुम केवल श्रद्धा हो
विश्वास रजत नग पग तल में,
पीयूष स्रोत–सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।''

महादेवी वर्मा का मानवतावाद आन्तरिक है। ये गाँधी और अरविन्द से प्रभावित है। ये सामाजिक विषमता और आर्थिक जर्जरता से पीड़ित व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति प्रकट करती है। इस सन्दर्भ में वे कहती हैं–

"कह दे माँ क्या देखूँ?
देखूँ खिलती कलियाँ या प्यासे सूखे अधरों को
तेरी चिर यौवन सुषमा या जर्जर जीवन देखूँ।''

कल्पना की प्रचुरता : छायावादी काव्य में कल्पना काव्य का पर्याय हो गई थी। निराला, पन्त, प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि ने कल्पना की ऊँची उड़ान भरते हुए अपने काव्य में अपने मनोभावों का स्वच्छन्द चित्रण प्रस्तुत किया है। कल्पना इनकी आकांक्षाओं का प्रतीक बन गई थी। निराला ने कल्पना के कानन की रानी कविता को नाम दिया है, तो पन्त जी ने कल्पना का ये विह्वल बाल कहा। पन्त जी की कल्पना की उड़ान बादल के माध्यम से दृष्टव्य है–

''हम सागर के धवल हास हैं।
जल के धूम, गगन की धूल अनिल फेन, ऊषा के पल्लव, वारिवसन वसुधा के मूल
हम ही जल में थल में जल, दिन के तम, पावक के धूल।''

f"kल्पगत प्रवृतियां : छायावादी काव्यधारा के f"kल्प पक्ष में स्वच्छन्दता का अनुभव किया जा सकता है। शुद्ध, परिनिष्ठित, परिमार्जित, साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग कामलता के साँचे में ढालकर किया गया है। छायावादी कवियों ने अपनी प्रतिभा से विषयानुरूप शब्दों को नए ढंग से प्रयुक्त करके भाषा को कलात्मक व काव्यात्मक रूप प्रदान किया है। इनके काव्य में अलंकारों का सहज, स्वाभाविक व नैसर्गिक प्रयोग हुआ है। नए उपमानों का प्रयोग करके उपमा अलंकार के प्रति आकर्षण अव"य चित्रित हुआ है, अन्यथा भावाभिव्यक्ति ही इनके काव्य में प्रमुख थी–

''वह क्रूर–काल–ताण्डव की स्मृति–रेखा–सी
वह टूटे तरु की छुटी लता–सी दीन
दलित भारत की विधवा है।
षड्ऋतुओं का श्रृंगार।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

प्रतीकों के प्रयोग से छायावादी काव्य में एक चमत्कार आ गया है। प्रतीक योजना द्वारा सूक्ष्म भावों, रूपों, व्यापारों आदि की अभिव्यक्ति की गई है। महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में आका"ा, फूल, तारे, दीपक, निर्झर आदि प्रतीकों का प्रयोग किया है यथा–

''मधुर मधुर मेरे दीपक जल!
युग युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल,
प्रियतम का पथ आलोकित कर!''

वे अमूर्त वस्तुओं के लिए मूर्त विधान करती है और मूर्त वस्तुओं के लिए अमूर्त विधान करती है। लाक्षणिक मूर्तिमत्ता का उदाहरण प्रस्तुत है–

''सकुच सलज खिलती शेफाली,
अलस मौलश्री डाली डाली;
बुनते नव प्रवाल कुंजों में,
रजत श्याम तारों से जालीय
शिथिल मधु–पवन गिन–गिन मधु–कण,
हरसिंगारझरते हैं झर झर !
आज नयन आते क्यों भर भर?''

गीतिकाव्य होने के कारण छायावादी काव्य में लाक्षणिकता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता तथा व्यंजनात्मकता की वि"ोषता देखी जा सकती है। मुक्त छन्दों में काव्य रचनाएँ लिखी गई। ह्रदय की सूक्ष्म भावों की सांकेतिक अभिव्यक्ति के लिए इन कवियों ने लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया। काव्य में अनुभूति, तीव्र भावना, उत्कृष्ट वासना चित्रण के लिए कवि ने बिम्बों के प्रयोग से कविता को चित्रमयी बना दिया है। ऐन्द्रिय विम्ब,, भाव विम्ब व दा"ार्निक वस्तुपरक बिम्ब का प्रयोग छायावादी काव्य में देखने को मिलता है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षतयः हम कह सकते हैं कि अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन दे"ा में घटित परिवर्तन, प्रेम के बदलते स्वरूप और रूस के प्रति आसक्ति ने छायावादी रचनाओं को बढ़ावा दिया। छायावाद का जन्म तत्कालीन युग की राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृति पुनरूत्थान के स्वरूप हुआ। डॉ० नगेन्द्र के शब्दों में मैं छायावाद को सार रूप में यहीं परिभाषित करूंगी कि–

''अधरों में राग अमंद पिये
अलकों में मलयज बंद किये
तू अब तक सोई है आली
आँखों में भरे विहाग री।''

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 11-Issue 02, (April-June 2023)

डॉ. नगेन्द्र ने इस साहित्य की समृद्धि की समता भक्ति साहित्य से की है। ''इस तथ्य से कतई इनकार नहीं किया जा सकता कि भाषा,भावना एवं अभिव्यक्ति–शिल्प की समृद्धि की दृष्टि से छायावादी काव्य अजोड़ है। विशुद्ध अनुभूतिपरक कवित्वमयता की दृष्टि से भी इसकी तुलना अन्य किसी युग के साहित्य से नहीं की जा सकती।इस दृष्टि से भक्ति काल के बाद आधुनिक काल का यह तृतीय चरण हिंदी साहित्य के इतिहास का दूसरा स्वर्ण–युग कहकर रेखांकित किया जा सकता है।इस कविता का गौरव अक्षय है,उसकी समृद्धि की समता केवल भक्ति काव्य ही कर सकता है।''

सम्बंधित पाठ्य– पुस्तकें

1. रामचंद्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी ।
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य : उद्‌भव और विकास, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
3. डॉ नामवर सिंह : छायावाद, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली।
4. डॉ नामवर सिंह : आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली ।
5. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : आधुनिक हिन्दी कविता, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली ।